



महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-11, अंक : 11-12 रविवार, 25 दिसं. '88	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी मानद सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00
--	---	---

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी

पिछले प्रसंगों में हमने देखा कि स्वामिश्री को देह का, मन का अत्यधिक अनादर था। महाराज की मूर्ति ही उनका प्राणमात्र थी.....महाराज का दर्शन उनके नयनों की तृप्ति थी। महाराज की मरजी में रहना ही उनके जीवन की पूर्णाहुति थी। महिमा का, सेवा-भक्ति का मूर्तस्वरूप—अर्थात् गुणातीतानन्दस्वामी.....

श्रीजी महाराज वड़ताल पधारे। यहां हरिनवमी का उत्सव करके महाराज संतमंडल के साथ उमरेठ पधारे। उमरेठ के हरिभक्त नंदराम ठाकर श्रीजी महाराज के प्रति अत्यंत भक्तिभाव वाले पर स्वभाव के थोड़े लोभी थे। परन्तु आज महाराज उनके आंगन में संतों सहित पधारने वाले थे। उससे स्वयं का अहोभाग्य मानकर नंदराम भाई ठाकर ने आम के रस व रोटली की उत्तम रसोई बनवाई थी। महाराज तथा सब संतों को अच्छी तरह खिलाने का उनका संकल्प था। महाराज उनके मनोरथ को समझकर स्वयं रस

परोसने संतों की पंक्ति में पधारे। सब संतों को खूब भर-भर के रस परोसते जायें और कहते जायें: 'संतों ! आज तो रस रोटली खूब खाओ, नंदराम भाई का अति आग्रह व प्रेम है। देखो तुम सबके दर्शन करते हुए उनका मुख कैसा प्रफुल्लित हो रहा है।' ऐसा कहकर फिर दुबारा पंक्ति में रस परोसते हुए घूमे। महाराज आज खूब आनन्द में थे इसलिए रस की धारा खूब जोर से उड़ा रहे थे। संत लोग ना कहते तो भी जबरदस्ती महाराज परोस देते और फिर कहते जाते थे: 'संतों आज खूब खाओ। नंदराम भाई ने भले आज तक लोभ करा पर आज छोड़ दिया है।' इस प्रकार सब संतों को हृद से अधिक खिलाकर खूब तृप्त कर दिया। संतों को अच्छी तरह खिलाकर बाद में महाराज हाथ-पांव धोकर स्वयं भोजन ग्रहण करने बैठे।

महाराज के रुकने का स्थान गांव के बाहर आम के पेड़ के नीचे था। खाना खाने के बाद

महाराज वहां पधारे। वहां आम के पेड़ की शीतल छाया में ढोलिया पर विराजे....संत सब महाराज के आस-पास बैठ गये। चैत्र का महीना चल रहा था सो गरमी खूब पड़ रही थी। सब संत अधिक खाना खाने से व गरमी से परेशान हो रहे थे। वहां महाराज एकदम बोले कि 'संतो आज तो तुमने खूब खाया है, इसलिए खड़े होकर कीर्तन बोलो तो खाना पच जायेगा।'

यह कैसी बात? चारों तरफ से लू बरस रही थी। और ज्यादा खाने से संतों को बैठना ही जब मुश्किल हो रहा था, तो खड़े होकर कीर्तन बोलने की तो किसमें ताकत? **पर महाराज के मुख में से यह वचन निकले ही थे कि स्वामिश्री तुरन्त खड़े हो गये।** स्वामिश्री को लगभग पांच सौ भजन कंठस्थ थे। तद्रूपानंदस्वामी के साथ स्वामिश्री ने लगातार दो घंटे तक खड़े होकर कीर्तन गाये। महाराज की इच्छा से दो घंटे तक आकाश बादलों से ढका रहा पर कीर्तन भक्ति समाप्त होते ही बरसात होने लगी। महाराज एकदम राजी होकर बोले : 'देखो तुमने कीर्तन भक्ति करी तो भगवान ने बरसात बरसायी और धरती को ठंडा कर दिया।'

देखने में यह प्रसंग सामान्य लगता है लेकिन इसका रहस्य खूब गहन है। महाराज को देह का लालन-पालन करने वालों के प्रति प्रसन्नता नहीं थी। देह के प्रति अनादर करने वाले दृढ़ संकल्पी महाराज की ओर ही निगाह रखकर जीने वाले स्वामिश्री हर क्षेत्र में महाराज की प्रसन्नता पा गये और हम सबके आदर्श बने !

साथ ही इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि साधु की कोई आज्ञा को पालने में परिस्थितियां

भले ही खूब कठिन दिखाई पड़ती हों। हमें ऐसा भी हो जाता है कि यह आज्ञा हम पाल सकेंगे? कैसे होगा? होगा या नहीं? पर साधु केवल हमारी थोड़ी सी धीरज, हमारी निष्ठा की कसौटी करता है ! और अगर हम वह आज्ञा पालने लग पड़ते हैं तो सब सुविधा करके वे संजोग ही ऐसे बना देते हैं कि हम उनकी आज्ञा आसानी से पाल सकें। यूं वे उनकी प्रसन्नता पाने का मौका सामने से देते हैं सेवक को निहाल करने.... ! हमने इस प्रसंग में भी देखा कि स्वामिश्री ने महाराज की आज्ञा पाली तो महाराज तो हुए, साथ साथ ही गरमी को भी बरसात बरसाकर ठंडक में बदल दिया !!

× × ×

स्वामी की बातें

116. पांच बातें सानुकूल हों तब प्रभु भजा जा सकता है;—संग, शास्त्र, श्रद्धा, अच्छा देश व अच्छा काल।

प्र.-2, 158

117. हमें तो बहुत लाभ हुआ है व बहुत बड़ी प्राप्ति हुई है पर हमें समझ में नहीं आता। जैसे पृथ्वी का राजा हो उसका पुत्र किसी तुच्छ पदार्थ के लिये रोये वैसे ही हमें महाराज का व बड़े संत का संबंध हुआ है पर इस जगत के तुच्छ विषय न मिलने पर या नष्ट होने पर उसका शोक होता है व उदास हो जाते हैं—उन्हें यह बात समझ में नहीं आती।

प्र-2, 159

118. एक व्यक्ति सारा दिन परिश्रम करके दुर्ग को बनाता है और दूसरा उस पर एक छोटा-सा कंकड़ मारकर उस दुर्ग को गिरा देता है। आखिर बनाने वाला थक जायेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि सारा दिन कारोबार करके एक क्षण सत्पुरुष की बातें सुनने से क्रिया का लगा जंग नष्ट हो जाता है।

प्र-2, 160

119. जब तक अपने आपको पुरुष मानेंगे तब तक स्त्री की आवश्यकता रहेगी और जब तक अपने आपको स्त्री मानेंगे तब तक पुरुष की आवश्यकता रहेगी। कहीं भी जाइये ऐसा ही होगा। अतः कहा है कि (प्रकृति पुरुष से परे) ब्रह्मरूप होकर भक्ति करना।

प्र-2, 161

120. अक्षरधाम, श्वेतद्वीप, बद्रीकाश्रम व इस लोक में एकांतिक साधु के पास—यह चार जगह पर माया की झंझट नहीं है, बाकी सब जगहों पर माया की झंझट है।

प्र-2, 162

121. ज्ञान के बिना तो सुख नहीं होगा और जो भक्ति करे उसको बड़े पुरुष हार दें या थाल (प्रसाद) दें, पर उससे संकल्प तो कम नहीं होंगे। सो समझदारी तो चाहिये ही—यूँ बात करी।

प्र -2, 164

122. इतना समझना कि जो यदि विषय में सुख होता तो महाराज उसमें हम पर बंदिश क्यों रखें? सो, उसमें सुख है ही नहीं पर उसमें सुख माना जाता है वह अज्ञान है और बड़े-बड़े भी इस रास्ते नहीं चलते।

प्र -2, 165

123. सत्संग में अनेक बातें समझनी हैं; उसमें मुख्य है उपासना; बाकी धर्म रखना व वचनामृत आदि शास्त्रों का अभ्यास रखना।

प्र-2, 166

124. परेशानी टालने का उपाय—
काल की गति जाननी,
जन्म-मृत्यु का दुःख विचारना,
भगवान की महिमा विचारनी
और अपना कोई नहीं व हम किसी के नहीं
व आत्मा तो तीनों देह से विलक्षण है।
इस प्रकार ज्ञानी को तो अनंत लोचन है व
परेशानी टालने के भी अनेक उपाय हैं। व
परेशानी के कई प्रकार हैं।

प्र -2, 167

125. पहले कुछ नहीं था और अब इतने कारखाने हुए व अभी हो रहे हैं—और होंगे। यह सब तो बढ़ता ही जायेगा पर विशेष तो कथावार्ता, ध्यान व बड़े संत का समागम—वही करना है।

प्र -2, 168

× × ×

...और
श्रीजी महाराज ने
कहा—

जो सत्संगी सत्संग से गिरने वाला हो उसमें असद्भावना की वृद्धि होती है। उसे पहले तो दिन-प्रतिदिन हरेक सत्संगी मात्र के अवगुण ही दिखाई पड़ते हैं और स्वयं हृदय में यूँ समझने लगता है कि 'सब सत्संगी तो समझदार हैं नहीं और मैं ही समझदार हूँ।' इस प्रकार स्वयं को सबसे अधिक समझकर रात दिन अपने हृदय में विक्षिप्त रहा करता है व दिन में कहीं चैन से नहीं बैठ पाता। रात को सोये तो उसे नींद भी नहीं आये व उसका क्रोध तो कभी मिटे ही नहीं। वह आधी जली लकड़ी के समान सुलगता रहता है। यूँ जिसे होया करता हो उसे जानना कि सत्संग से अब यह हटने को है। ऐसा जो हो वह

जितने दिन भी सत्संग में रहे, उसके हृदय में कभी सुख नहीं आता व अन्त में पीछे हट जाता है।

और सत्संग में जिसकी प्रगति हो रही हो उसकी शुभवासना वृद्धि को पाती है। तब उसे दिन-प्रतिदिन हरेक सत्संगी का हृदय में गुण ही आता है और सब हरिभक्तों को बड़ा मानता है व अपने आपको न्यून समझता है। आठों प्रहर उसके हृदय में सत्संग का आनन्द छाया रहता है। ऐसे लक्षण जब दिखाई पड़े तब जानना कि 'उसमें शुभवासना की वृद्धि हो रही है।' वह जैसे-जैसे अधिक सत्संग करता है वैसे-वैसे उसकी प्रगति होती जाती है व अतिशय महत्ता को प्राप्त करता जाता है।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-28

शुक्रवार, 30 दिसं. 1819

× × ×

ब्रह्मवाह

...हरेक काम—छोटा या बड़ा—परन्तु, पू. बापा की स्मृति रखकर याद करके—बाद में ही क्रिया करने की आदत डालते जाओ, तो चेतना की प्रगति अच्छी होगी। अब एकांतिक धर्म सिद्ध करने तुम्हारा नंबर लगा, सो प्रवृत्ति चाहे कितनी भी करो पर मन गुरु के चरणों में रखकर वर्तना। उससे कोई भी विघ्न पड़ेगा नहीं और सब सहजता से होता

जायेगा.....भगवान जिसके पक्ष में हो वहां माया क्या कर पायेगी? तो राजी रहना व बल में रहना।

17.3.67

प.पू. काकाजी महाराज

तुम सबकी ओर से धून्य-प्रार्थना चल रही है। प.पू. स्वामीबापा हमें चाहे जैसी भी अग्नि परीक्षा में से गुजारें, तो भी अब तो आनंद से—हर्ष से गुरुमुखी ही दृष्टि रखकर पास हो जाना है। तो हमें जाग्रकता का भजन व अखंड दिव्यभाव ही मिल-जुलकर दृढ़ करते जाना है। सुहृदभाव का डंका बजाना है।

जैसे हैं वैसे स्वरूप व उसको मिले हुए की—देह होते हुए ही तत्त्व से पहचान हो जाये व उनकी मर्जी अनुसार जीवन जीया जाये ऐसी आदत डालनी है। संबंध वाले सबको दिव्य मानकर, मूर्तिधारकर रहकर प्रगट स्वरूप के ही गुणगान गाया करना—उनकी ही अखंड स्मृति में रहकर—ब्रह्मरूप से ही पलपल वर्ता जाये ऐसा सहज जीना है। तो पू. बापा भी हिल जायेंगे और सोखड़ा में ही दिव्यरूप से अखंड रहकर अक्षरधाम का सुख देकर स्वयं के चरणों में स्वीकार लेंगे। जो कुछ बन रहा है वह वे ही कर रहे हैं यूं मानकर हर्ष सहर्ष सत्कार लेना। सो, खूब ही बल में रहकर भजन करना।

अप्रैल' 67

प.पू. काकाजी महाराज

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	3.1.89	मंगलवार	एकादशी, व्रत
2. दि.	14.1.89	शनिवार	मकर संक्रान्ति
3. दि.	15.1.89	रविवार	नवमी
4. दि.	17.1.89	मंगलवार	एकादशी, व्रत
5. दि.	21.1.89	शनिवार	पौषी पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानन्दस्वामी दीक्षा दिन।

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,

A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7229327

Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110 032